بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 05.12.25

तबूक नामक युद्ध एवं कुछ अन्य अभियानों के परिवेश में नबी करीम ﷺ के जीवन चरित्र का ब्यान।

सारांश ख़ुत्बः जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआलबिनस्रिहिल अज़ीज़ि, यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (नबुव्वत की तिथि 5 ,1404 हश) 05.12. 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद,तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- गत ख़ुत्बे में हज़रत कअब बिन मालिक रज़ी. तथा कुछ दूसरे सहाबा रज़ी. के तबूक नामक युद्ध में पीछे रह जाने और उसपर आंहज़रत ﷺकी नाराज़गी का वर्णन हुआ था। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. इस सन्दर्भ में जमाअत को नसीहत करते हुए फरमाते हैं कि हदीसों में आता है कि तीन मोमिन भी तबूक की लड़ाई में शामिल न हुए थे। जब रसूले करीम ﷺने उनके साथ सम्बन्ध विच्छेद का आदेश दिया तो मदीने वालों में से भी किसी को इतना सहस न था कि उनसे बात चीत करे। आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि यहाँ क़ादियान में तो मैंने देखा है कि जिन लोगों के साथ दंड के कारण बात चीत करना मना है वे अहमदियों के घर भी चले जाते हैं, मुहल्ले वाले संभवतः सोए रहते हैं कि उनको पता ही नहीं लगता, बल्कि मदीने में कोई मुनाफ़िक़ भी उनसे बात चीत न कर सकता था। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया 1936 ई. में जबकि उस ज़माने में कुछ उपद्रव हुए थे, जिसके कारण आप रज़ी. को यह कहना पड़ा था।

हज़रत मुस्लेह मौऊद एक अन्य स्थान पर फ़रमाते हैं- कअब बि न मा लिक रज़ी. की घटना कैसी सीख देने वाली घटना है। वे समस्त लड़ाइयों में आंहज़रत ﷺके साथ रहे, मक्के

पर विजय के समय भी साथ थे, परन्तु तबूक के युद्ध में सुस्ती के कारण पीछे रह गए। नबी करीम ﷺ ने उन्हें ऐसा कठोर दंड दिया। किन्तु हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि आजकल के लोग हैं कि यदि कुछ डांट-डपट की जाए, कोई छान-बीन की जाए तो वे कहते हैं कि हमारी सेवाओं को हीन समझा गया और हमारी प्रतिष्टा का ध्यान नहीं रखा। याद रखना चाहिए कि व्यवस्था अलग चीज़ है और काम करना अलग चीज़, तथा व्यवस्था चलाने के लिए, जो ग़लती करता है उससे पूछा जाता है, चाहे वह कोई हो। अतः ख़ुदा के आदेशानुसार दीन के लिए ऐसे प्रयास करो कि शैतान को भगा दो। परन्तु इसलिए कदाचित न करो कि तुम्हारी प्रशंसा की जाए, और काम करके यह मत आशा रखो कि हमारी गलतियों पर हमसे कुछ न पूछा जाएगा। फिर ख़ुदा पर एहसान मत जताओ तथा कष्टदायक बातों से बचो, पूरे साधनों से इस्लाम की सेवा करो, उपकार न करो बल्कि सेवा करो, यही भावना होनी चाहिए अल्लाह को प्रसन्न करने की।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- तबूक के युद्ध की यात्रा ऐसी युक्ति संगत एवं बरकत वाली साबित हुई कि पूरे अरब में मुसलमानों की धाक बैठ गई और थोड़ी ही देर में पूरे अरब पर इस्लाम का झंडा फैराने लगा। इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि तबूक से वापसी के बाद ताएफ़ के लोगों ने भी आधीनता स्वीकार कर ली तथा उसके बाद अरब के विभिन्न क़बीलों ने भी एक के बाद एक ने आकर इसलाम के शासन में सम्मिलित होने की अनुमति चाही और सारे अरब पर इस्लामी झंडा लहराने लगा।

वापसी के बाद एक सैन्य अभियान भी हुआ था जिसे सरिय्या ख़ालिद बिन वलीद कहा जाता है। जिसे नजरान के एक भाग बनू हारिस की ओर भेजा गया था। एक रिवायत के अनुसार यह सरिय्या रबीउल अव्वल 10 हिजरी में घटित हुआ। इस अभियान पर रवानगी के समय रसूलुल्लाह ﷺ ने ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. को यह निर्देश दिया था कि उस क़बीले पर हमले से पहले तीन बार उन्हें इस्लाम की दावत देना, यदि वे स्वीकार न करें तो तब उनके साथ युद्ध करना। हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने इस निर्देश के अनुसार कार्य किया और वे समस्त लोग मुस्लमान हो गए। हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने एक पत्र रसूलुल्लाह ﷺ की सेवा में भिजवाया और उसमें लिखा कि आप स. की हिदायत पर हमने उन्हें इस्लाम का पैग़ाम पहुँचाया और उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया, अब मैं उनके साथ रह रहा हूँ तथा उन्हें दीन की बातें सिखा रहा हूँ, अगला जो आदेश आपकी ओर से मिलेगा उसके अनुसार काम करूंगा। आंहुज़ूर ﷺ ने इस पत्र के उत्तर में फ़रमाया कि तुम्हारे पत्र से ज्ञात हुआ कि बनू हारिस ने इस्लाम स्वीकार कर लिया है, अतः तुम उन्हें अल्लाह की ओर से मिलने वाले सवाब की ख़ुश ख़बरी सुनाओ और अल्लाह के प्रकोप से डराओ तथा उनमें से कुछ लोगों को लेकर तुम हमारे

पास आ जाओ। हज़रत ख़ालिद रज़ी. उनमें से कुछ लोग लेकर आंहुज़ूर ﷺ के सेवा में उपस्थित हो गए।

आंहज़रत ﷺने क़ैस बिन हुसैन को बनू हारिस का अमीर नियुक्त फ़रमाया और शव्वाल अथवा ज़ीक़अदा के अन्त में उन्हें वापस किया। उनकी वापसी के चार महीने बाद हुज़ूर ﷺका निधन हो गया।

आंहज़रत ﷺका अन्तिम युद्ध, गज़वा ए तबूक था और अन्तिम अभियान जिसे आप स. ने रवाना फ़रमाया वह उसामा की सेना थी। उसामा की सेना से पहले एक सेना जा चुकी थी। इस विषय पर बुख़ारी में हज़रत अनस रज़ी. कि रिवायत है कि नबी करीम ﷺने लोगों को हज़रत ज़ैद रज़ी, हज़रत जाफ़र रज़ी. तथा हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. की शहादत की ख़बर दी और आप स. की आँखें आंसू बहा रही थीं। इसके बाद आप स. ने फ़रमाया कि फिर अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार ख़ालिद बिन वलीद ने इस्लाम के झंडे को थामा और अल्लाह ने उसके हाथ पर मुसलमानों को विजय प्रदान की।

हज्जतुल्विदा से वापसी पर आप स. जब मदीना वापस पहुंचे तो उस समय मुसलमानों को दक्षिण की ओर से ख़तरे की संभावना नहीं रही थी किन्तु उत्तर दिशा से रौम का ख़तरा अभी शेष था, क्यूंकि उन नसरानियों (ईसाईयों) को अभी तक अपनी शक्ति पर बड़ा गर्व था, इस लिए किसी समय भी उनकी ओर से आक्रमण हो सकता था। इसी प्रकार अभी मौता नामक युद्ध में मारे जाने वालों का बदला लेना शेष था, क्यूंकि उस युद्ध में हज़रत ख़ालिद रज़ी. के अभ्यस्त होने के कारण मुसलमानों की सेना मदीने वापस आने में सफल हुई थी। हज से वापस आए अभी आप स. को अधिक समय न हुआ था कि आप स. ने हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ी. के नेतृत्व में एक सेना को शाम देश पर आक्रमण करने का आदेश दिया।

इस सेना की तय्यारी जो हुज़ूर ﷺकी बीमारी से पहले शुरू हो चुकी थी, आप स. के निधन से दो दिन पहले पूरी हुई। आप स. ने सिफ़र महीने के अन्त में रौमियों से युद्ध करने का आदेश दिया था और उस अवसर पर हज़रत उसामा रज़ी. को बुलाया और फ़रमाया कि अपने वालिद की शहादत के स्थल की ओर रवाना हो जाओ और उन्हें अर्थात दुश्मनों को रौंद डालो। मैंने तुम्हें इस सेना का अमीर नियुक्त किया है। हज़रत उसामा रज़ी. आँहुज़ूर ﷺके हाथ से बांधा हुआ झंडा लेकर रवाना हुए और उसे हज़रत बरीदा बिन हसीब रज़ी. को दिया तथा जर्फ़ नामक स्थान पर सेना को जमा किया। जर्फ़ मदीने से तीन मील की दूरी पर उत्तर की ओर एक स्थान है। महाजिरों एवं अंसार के प्रतिष्ठित लोगों में से लगभग समस्त लोग इस सेना में शामिल थे, जिनमें हज़रत अबू बकर रज़ी. तथा हज़रत उमर रज़ी. इत्यादि लोग शामिल थे। इन समस्त प्रतिष्ठावान सहाबा पर हज़रत उसामा रज़ी. को अमीर नियुक्त किया गया था।

लोगों ने इस पर बातें शुरू कर दीं कि इतने बड़े बड़े सहाबी रज़ी. पर एक लड़के को अमीर नियुक्त किया गया है। हुज़ूर ﷺ तक यह बात पहुँची तो आप स. बड़े नाराज़ हुए और मिम्बर पर चढ़ कर लोगों को संबोधित किया जिसमें हज़रत उसामा रज़ी. और उनके वालिद हज़रत ज़ैद रज़ी. के विषय में अति उत्तम बातें पेश फरमाईं।

एक ओर आप स. की बीमारी बढ़ रही थी और दूसरी ओर आप स. यह आग्रह फ़रमा रहे थे कि उसामा की सेना हर हाल में रवाना हो। इतवार के दिन उसामा रज़ी. जर्फ़ नामक स्थान से वापस आप स. से मिलने के लिए उपस्थित हुए। आंहुज़ूर ﷺ बात नहीं कर सकते थे, किन्तु दोनों हाथ आसमान की ओर उठाते और उसामा रज़ी. के सिर पर रख देते, मानो आप स. उसामा रज़ी. के लिए दुआ कर रहे थे। सोमवार को आप स. का स्वास्थ्य तनिक संभल गया तो आप स. ने उसामा रज़ी. से फ़रमाया कि अल्लाह तआला की बरकत से रवाना हो जाओ। उसामा रज़ी. वापस सेना में आए और रवानगी का आदेश दिया। ठीक उसी समय हज़रत उसामा रज़ी. को हुज़ूर ﷺ के अंतिम क्षणों के विषय में सन्देश मिला। आप रज़ी. हज़रत अबू बकर रज़ी. और हज़रत उमर रज़ी. आदि सहबियों को लेकर वापस आए, उस समय आप स. अंतिम साँसें ले रहे थे, कुछ ही देर बाद आंहुज़ूर ﷺ का देहांत हो गया।

हज़रत उसामा रज़ी. की सेना हज़रत अबू बकर रज़ी. की बैअत के बाद रवाना हुई। इस सेना की संख्या तीन हज़ार थी, जिसमें एक हज़ार घुड़सवार थे। यह सेना सफलता पूर्वक वापस आई। दुशमन या तो मारा गया या बंदी बना। मुसलमानों में से किसी की कोई हानि नहीं हुई।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि यह युद्धों का क्रम अब पूरा हुआ, आगे अब सीरत के कुछ और आयाम देखने होंगे, इंशाल्लाह देखूँगा।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने दो मृतकों मु कर्रम अजीज़ुर्रहमान ख़ालिद साहब मुरब्बी सिलसिला और मुकर्रम एधी हमीदी साहब आफ़ इंडोनेशिया का सदवर्णन और जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने का एलान फ़रमाया और मृतकों की मग़फ़िरत और दर्जात की बुलंदी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131–टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब